रोटी में भूख

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020
ISBN : 978-93-88781-17-6
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

ROTI MEIN BHOOKH (POETRY) Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

नदिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह क़ायनात

ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

मानसिकता का जंग	9
जीवन ही हिंसा	13
पिता का अहसान	21
ठेके पर देश	23
मुहब्बत	28
मूल्याकंन	30
बुरी बात	34
पुरखों की विरासत	40
ज़िन्दगी	48

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक़्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्कारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

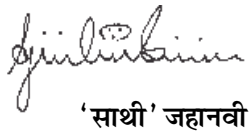

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

मानसिकता का जंग

लोहा सबसे मज़बूत धातु है
जिसे कोई भी जीव और धातु
नष्ट नहीं कर सकते
यहाँ तक कि ख़ुद लोहा भी
लोहे को नष्ट नहीं कर सकता

हाँ इतना ज़रूर है कि
एक लोहा दूसरे लोहे को
काट तो ज़रूर सकता है
मगर लोहा भी लोहे को
नष्ट नहीं कर सकता
इसलिये सभी प्रकार के
अस्त्र-शस्त्र, मशीनें,
कलपुर्जे और औजार
लोहे से ही बनाये जाते हैं

मगर लोहा अपने आपको
बेकार साबित करले तो
उसकी अपनी ख़ुद की
ना कुछ मामूली जंग ही
सबसे मज़बूत धातु लोहे को
बहुत आसानी से गलाकर
मिट्टी में मिला देती है

उसी प्रकार एक इन्सान
जो सम्पूर्ण संसार जगत में
शारीरिक और मानसिक रूप से
सभी जीव और जन्तुओं में
सबसे ज़्यादा विकसित,
शक्तिशाली और समृद्ध है
उसे कोई भी
ताक़तवर इन्सान
या अन्य जीव जन्तु
ख़त्म नहीं कर सकते
मगर ख़ुद इन्सान की
अपने मन की नकारात्मक
मानसिकता की सोच और समझ
प्रकृति के सबसे विकसित
और ताक़तवर जीव को
बहुत ही आसानी से
बिना अस्त्र और शस्त्र के
बर्बाद और तबाह कर देती है

इसी प्रकार
ऊर्जावान और गतिमान
निर्मल और पवित्र पानी भी
जल ही जीवन होकर
सम्पूर्ण संसार जगत के
सभी जीव जन्तुओं के लिये
बहुत महत्त्वपूर्ण होता है
लेकिन रवानी और रफ़्तार से
सीमाओं में बन्धकर थम जाये तो

मटमैला और गन्दा होकर
सभी जीव जन्तुओं के लिये
बिना काम का हो जाता है

भाई-भाई, पिता-पुत्र,
भाई-बहन, माँ-बेटी
और अन्य ख़ून के रिश्ते
पति और पत्नी के रिश्ते
विश्वास में दोस्ती के रिश्ते
जब तक हम ख़ुद न चाहे
तब तक कोई भी
ताक़तवर दुश्मन
ख़त्म नहीं कर सकता
मगर हमारी ख़ुद की
नकारात्मक ख़ुदग़र्ज़ सोच
और समझ, आपस का विश्वास,
ईर्ष्या, रंजिश और नफ़रत
बहुत ही आसानी से
ख़ून और गहरे रिश्तों को भी
तन मन से ख़त्म कर देती है

इन्सान के चरित्र, इज़्जत,
आबरू, अस्मत, मान
और सम्मान का कोई भी
कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता
चाहे दुश्मन आर्थिक, सामाजिक
और शारीरिक रूप से
कितना ही सक्षम, समर्थ

और शक्तिशाली क्यों न हो
मगर ख़ुद की अज्ञानता
और बुरे कर्म स्वयं इन्सान को
बहुत आसानी से ख़त्म कर देते हैं।

जीवन ही हिंसा

स्पर्धा में हिंसा

सभी जीव जन्तु
सभी पेड़ पौधे
सभी मानव दानव
अपनी अपनी प्रजाति में
एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी हैं
बड़ा पेड़ छोटे पौधे को
फलने फूलने नहीं देता
बड़ी मछली छोटी मछली को
भोजन के लिये निगल जाती है
समर्थ और शक्तिशाली मनुष्य
असहाय और कमजोर मनुष्य को
पनपकर समर्थ होने नहीं देता
ये सब हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

संस्कृति में हिंसा

प्रकृति को अपने अनुसार
उपयोगी, सुसंस्कृत
और सुन्दर बनाने के लिये

प्राकृतिक प्रकृति को
अपने वश में करना पड़ता है
जिसके लिये प्रकृति के
प्राकृतिक मूल स्वरूप में
परिवर्तन करना पड़ता है
इसलिये प्रकृति में
अपनी सुविधानुसार
उपयोगी परिवर्तन में भी
अप्रत्यक्ष हिंसा शामिल है
ये सब हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

ज़मीन से हिंसा

खेती करने के लिये
पेड़ों को काटना पड़ता है
पौधों को जलाना पड़ता है
जंगली घास को
जड़ों से उखाड़ना पड़ता है
ज़मीन से छेड़खानी करके
समतल करना पड़ता है
ज़मीन को जख़्मी करके
खेत में हल चलाना पड़ता है
ज़मीन से अधिक उपज के लिये
उपजाऊ क्षमता से छेड़खानी करके
अप्राकृतिक खाद डालना पड़ता है
फसल की रक्षा के लिये

बहुत सारे जीव जन्तुओं को
कीट नाशक से मारना पड़ता है
फसल की सुरक्षा के लिये
पशुओं को भगाना पड़ता है
खेतों में खड़ी फसल को
जीवित काटना पड़ता है
फसल को लाने ले जाने में
बैलों के बल का
उपयोग करना पड़ता है
ये सब हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

भोजन में हिंसा

भोजन बनाने के लिये
फसलों, सब्जियों और फलों को
तोड़ना, काटना, चूर करना,
उबालना, भूनना
और तलना पड़ता है
यह सब हिंसक प्रक्रिया
नहीं है तो और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है
ऐसी हिंसा जीव जन्तुओं के
ज़िन्दा रहने के लिये ज़रूरी है
तो क्या इसलिये स्वीकार्य है

अधिकार में हिंसा

संसार को नियन्त्रित
करने की महत्त्वाकांक्षा
किसी भी मनुष्य को
अनुचित आदेश देना
किसी भी जीव जन्तु
किसी भी पशु पक्षी को
अपने वश में करना
किसी की मज़बूरी का
नाजायज़ फायदा उठाना
किसी को भी भावनात्मक रूप से
हैरान, परेशान, प्रताड़ीत करना,
किसी को डराना और धमकाना
ये सबके सब मनोवैज्ञानिक
और वैचारिक हिंसा नहीं है तो
फिर और क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

मानसिक हिंसा

अपनी जिद को पूरी करना
अपने विचारों से किसी को
जबरन सहमत करवाना
जायज़ बात पर भी गुस्सा करना
अपशब्दों का प्रयोग करना
आलोचना और निन्दा करना
चिड़ाना और मज़ाक बनाना

किसी को भी नाराज करना
किसी को इन्तज़ार करवाना
शरारत करना या मूर्ख बनाना
ईर्ष्या, रंजिश और नफ़रत करना
ये सबके सब मानसिक
और भावनात्मक
हिंसा नहीं है तो
फिर और क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

प्यार में हिंसा

चाहे शारीरिक सम्बन्ध
एक दूसरे की सहमती से
मधुर ही क्यों न हो
बल का भी तो
ज़रूर प्रयोग होता है
यह मधुर प्यार में
हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

ममता में हिंसा

भ्रूण का गर्भ में
माँ से पोषण लेना
जन्म के बाद बच्चे का
माँ के स्तन से दूध पीना

फिर प्यार और ममता में
यह बच्चे का माँ के प्रति
हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

पानी के प्रति हिंसा

पानी के बहाव को रोक कर
झील या तालाब बनाना
पानी को गर्म करके भाप बनाना
पानी को बर्फ़ के रूप में जमाना
भूगर्भ जल को निकालना
ये सब पानी के प्रति
हिंसा नहीं है तो और क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

आचरण में हिंसा

ख़ुदग़र्ज़ी, मोहमाया, धोखा,
फरेब, झूठ, चोरी-डकैती,
बुरी नज़र, बुरा सुनना,
बुरा देखना, बुरा बोलना,
सपनों से समझौता करना
इच्छाओं को दफ़्न करना
अपने मन को मारना
सम्बन्धों में जकड़कर रहना

इत्यादि अनैतिकता से
तमाम उम्र ज़िन्दा रहना
फिर मनुष्य का जीवन
हिंसा नहीं है तो
और फिर क्या है
क्या किसी जीव की
प्रत्यक्ष हत्या ही हिंसा है

व्यवहार में हिंसा

मौन और ख़ामोशी
शब्दों और विचारों से
ज़ुबान की हिंसा है
ध्वनी प्रदूषण कानों के प्रति हिंसा है
स्वाद में अधिक भोजन
पेट के प्रति हिंसा है
विलासता और कंजूसी
दौलत के प्रति हिंसा है
अन्याय और अत्याचार
मानवता के प्रति हिंसा है
क़ैद और जासूसी
आज़ादी के प्रति हिंसा है
स्वार्थ की प्रार्थना व साधना
आस्था के प्रति हिंसा है
कामना और वासना
भावनाओं के प्रति हिंसा है

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष
हिंसा के बिना

किसी भी जीव का
ज़िन्दा रहना नामुमक़िन है
तो क्या सक्रिय जीवन की
प्रतिदिन की दिनचर्या
हिंसात्मक नहीं है तो
फिर और क्या है।

पिता का अहसान

बेहद ज़िम्मेदार लगते हैं
बूढ़े होते पिता के
झुर्रियों वाले काँपते हाथ
इन बुजुर्ग हाथों में
इतना संघर्ष छुपा है
बरसों की मेहनत, त्याग,
सर्म्पण और ज़िम्मेदारियों को
निभाते जाने की कोशिशों की
कितनी जद्दोजहद छुपी हुई है

ऐसा भी मुमक़िन है कि
अपने बच्चों की
तक़्दीर सँवारने में
भले ही उनकी ख़ुद की
बूढ़ी हथेलियों में
अपनी किस्मत की
लकीरें धुंधला गई हों
जिन हाथों ने
हमें उंगुली पकड़कर
चलना सिखाया
अपने हिस्से का
सारा संसार दिखाया

हमारा भविष्य बनाने के लिये
अपना भविष्य दाँव पर लगाया
जब जब भी हम गिरे
हमें उठाकर
अपने सीने से लगाया
उन हाथों से मज़बूत भला
किसके हाथ हो सकते हैं

जब हम नाजुक
और कमजोर थे
तब पिता के हाथ
हमें मज़बूती देकर
हमारा सहारा बने
भले ही उन हाथों की
शक्ति कभी कमज़ोर होने लगे
तब भी वो हाथ हमें
उतने ही मज़बूत लगते हैं
बूढ़े होते अपने पिता के
कँपकँपाते हाथों में
अपना हाथ देकर देखिये
हर बार अहसास होता है कि
उनके पास देने के लिये
बहुत कुछ इतना है
और उनके अनुभवी हाथों में
हमारा अस्तित्व
पूरी तरह से सुरक्षित है।

ठेके पर देश

पहले राजे महाराजे
छोटे राजे रजवाड़ों,
ज़ागीरदारों, ज़मींदारों को
तथा कथित सामाजिक
और शत्रुओं से सुरक्षा
और अन्य व्यवस्थाओं के नाम पर
प्रति वर्ष एक निश्चित रकम
राजकोष में जमा कराने का
आदेश दिया करते थे
जिसे बेचारे असहाय
भोले भाले निर्धन
और दरिद्र किसानों से
वसूल किया जाता था
जिसे लगान कहते थे

बाद में यही व्यवस्था
मुस्लिम शासकों ने भी
निरन्तर जारी रखी
वो भी तथा कथित सुरक्षा
और व्यवस्थाओं के नाम पर
एक निश्चित वार्षिक रकम
क्षेत्रफल के आधार पर

वसूल किया करते थे
जिसे नज़राना कहा जाता था
इसे भी बेचारी जनता
और बेबस किसानों से ही
वसूल किया जाता था
चाहे कितनी भी विपरित
परिस्थितियाँ क्यों नहीं हों

इसके बाद भी
वसूली की यही व्यवस्था
अग्रेजों ने भी
देश को गुलाम बनाकर
बदस्तुर जारी रखी
अग्रेजों ने भी नवाबों,
बादशाहों, राजाओं,
और महाराजाओं को
तथा कथित सुरक्षा
और व्यस्थाओं के नाम पर
एक निश्चित वार्षिक रकम
लगातार वसूलना जारी रखा
जिसे हरहाल में
वसूल किया जाता था
चाहे कितना भी भयंकर
अकाल और सूखा पड़े
चाहे कितनी ही
बाढ़ भूकम्प जैसी
प्राकृतिक आपदायें आयें
अंग्रेजों के करों का कहर

कमर ही तोड़ देता था
इन ज़ालिम करों को भी
बेचारी मज़बूर जनता
और बेबस किसानों से
वसूल किया जाता था

अब वसूली की
यह कर व्यवस्था
देश की लोकतांत्रिक
सरकारों के हाथों में है
जिसे देश की बेबस जनता
ख़ुद मत देकर चुनती है
चाहे देश और राज्य में
सरकारें किसी भी
दल की क्यों न हो
सभी सरकारों का
एक ही मक़सद होता है कि
विभिन्न करों के माध्यम से
सरकारों के राजकोष का
खज़ाना भरते रहना चाहिये
इसी बहाने नेताओं की
तिजोरियाँ भी भरती रहती हैं

लोकतांत्रिक सरकारें
सुविधाओं के नाम पर
ठेकों के माध्यम से भी
धन संग्रह करती हैं
जब कर वसूलने का

ठेका होता है तो
जो ज़्यादा बोली
या नीलामी लगाता है
उस ठेकेदार को ही
सरकारी सुविधाओं
जैसे टोल टेक्स, वाहन स्टेण्ड
शराब और भांग के
ठेकों के एवज में
कर की रकम वसूल करने का
ठेका दिया जाता है

जब सरकारें
सुविधाओं के नाम पर
खर्च करने का
ठेका देती है तो
जो ठेकेदार कम खर्च में
निर्धारित काम करता है
उसे ही ठेका दिया जाता है
चाहे निर्माण कार्य
और सुविधायें कितनी ही
घटिया क्यों नहीं हो
दोनों ही परिस्थितियों में
सरकारें हरहाल में
फ़ायदे में रहना चाहती हैं

मगर चालाक, ख़ुदग़र्ज़
और मक्कार ठेकेदार
सरकारों को चूना लगाकर

चपत लगा देते हैं
जैसे गठबन्धन से
सरकारें बनती हैं
वैसे ही ठेकेदार भी
आपसी गठबन्धन से 'पूल' करके
समझदार और बुद्धिमान
सरकारों को बेवकूफ़
और मूर्ख बनाकर
सरकारों का आर्थिक
नुकसान कर ही देते हैं

इस प्रकार
यह भारत देश
आदि अनादि काल से
ठेके पर चलता आया है
और आगे भी इसी प्रकार
ठेके पर चलता रहेगा
मगर हरहाल में शोषण तो
बेचारी भोली भाली, मासूम,
निर्धन और मज़बूर
जनता का ही होता है
बेबस जनता मज़दूरों की तरह
बन्धुआ मज़दूरी करती रहती है
और सरकारें, अफ़सर, ठेकेदार
नेता, मंत्री और धन्ना सेठ
अपनी तीजोरियाँ भरते रहते हैं

मुहब्बत

ज़िंदगी तड़प रही है
मौत मचल रही है

दिल की बेवफ़ाई से
दुआयें निकल रही हैं

मिलन के इंतज़ार में
आहें सुलग रही हैं

विरह की वेदनाओं से
बेताबी में जल रही हैं

ऐसी चाहत व क़शिश
अपनी साँसें खल रही हैं

तौहिन औ बेरूखी ऐसी
ख़ुद को ही तल रही है

बदनामी से बेआबरू
वफ़ा ख़ुद छल रही है

ख़्वाब औ ख़यालात
उम्मीदें ढल रही है

कामयाबी की कोशिशें
अपने हाथ मल रही है

मन की मनोकामनायें
आरजू में गल रही है

दिल की नादानियाँ
ज़ख्मे दवा मिल रही है

इशारों में ही बातें
ज़ुबान सिल रही है

नामुमक़िन में मुमक़िन
ज़िंदगी ऐसे चल रही है

बेख़बर सारे ज़माने से
बेख़ुद तन्हाई पल रही है।

मूल्याकंन

हम चार पाँच
समझदार और
पढ़े लिखे इन्सान
एक जगह पर
इकट्ठा होकर
किसी अनुपस्थित
छठे इन्सान का
मजाक बनाकर
आलोचना करते हैं
या उस अनुपस्थित की
सोच और समझकर
जान बूझकर खिल्ली उड़ाते हैं

कोई दूसरे अन्य
चार पाँच समझदार
और पढ़े लिखे इन्सान
दूसरी जगह पर
इकट्ठा होकर
और वो भी
किसी अन्य अनुपस्थित
छठे इन्सान का
मजाक बनाकर

आलोचना करते हैं
सोच और समझकर
जान बूझकर खिल्ली उड़ाते हैं

क्या यही हमारे
वक़्त को गुज़ारने के
आसान, प्रसन्नचित
और सुखदायक तरीके हैं

क्या यही हमारे
सामाजिक समरसता
और मित्रता के सद्भाव हैं
क्या यही हमारे
वैचारिक दृष्टिकोण हैं

हम क्यों नहीं
ख़ुद अपना चेहरा
आईने में देखते हैं
हम क्यों नहीं
अपने फटे गिरेबान में
ख़ुद झाँक कर देखते हैं

हम क्यों नहीं
अपने स्वयं का
सहज और सरल होकर
दूसरों की नज़रों से
मूल्याकंन करते हैं
हम ख़ुद स्वयं

दूध का दूध
और पानी का पानी
क्यों नहीं करते हैं

कोई और दूसरे भी
आपके स्वयं के बारे में
ऐसा ही करेंगे
जैसा आप अन्य
दूसरों के बारे में करते हैं
तो आपको कैसा लगेगा।

बुरी बात

माँस खाना

जिन जानवरों का
हम माँस खाते हैं
उनको भी मालूम है कि
माँस खाना बुरी बात है
इसलिये वे सभी जानवर
शाकाहारी ही होते हैं
जिन जानवरों का
हम माँस खाते हैं
फिर भी हम सब
चाव से माँस खाते हैं

बुरे काम

एक बार गुनाहों के
चक्रव्यूह में फँसने के बाद
गुनाहों के दल-दल से
निकलना बहुत मुश्क़िल होता है
इसलिये हर गुनाहगार
जैसे चोर, झूठे, हत्यारे,
बलात्कारी, देशद्रोही,
शराबी, रिश्वतखोर,
लुटेरे, आंतकवादी

और भी अन्य
सभी बुरे इन्सानों
और अपराधियों को भी
ये मालूम होता है कि
बुरे काम करना ग़लत है
इसलिये वो पश्चाताप
और प्रायश्चित करते हैं
इसलिये वो चाहते हैं कि
उनकी नालायक
और बेरोजगार सन्तानें भी
कोई भी बुरा काम नहीं करे
इसके बज़ाय तो
मेहनत मज़दूरी से
सन्तुष्ट होकर कम खर्चे में
अपना जीवन यापन करले
या फिर भीख माँग कर
अपना गुज़र बसर करले

तन का सौदा

हर एक वेश्या को भी
ये मालूम रहता है कि
अस्मत का सौदा करना
बहुत बुरी बात है
इसलिये हर तवायफ
दिल से यह चाहती है कि
उसकी बदनसीब बेटी भी
अपना बदन बेचकर
जलालत का पेशा नहीं करे

जान लेना

एक जल्लाद को भी
ये मालूम रहता है कि
किसी भी इन्सान की
जान लेना बुरी बात है
भले ही इन्सान
कितना ही बड़ा
अपराधी क्यों नहीं हो
भले ही फाँसी पर लटकाना
उसके रोजगार का
साधन ही क्यों नहीं हो

इसलिये हर जल्लाद
यही चाहता है कि
उसकी बेरोजगार सन्तान भी
ये पेशा नहीं अपनाये
भले ही भूखे मर जाये
या फिर भीख माँग कर
अपना जीवन यापन करले

बेवफ़ाई

दिल तोड़ने वाले
हर बेवफ़ा को
यह मालूम रहता है कि
किसी का दिल तोड़ना
बहुत बुरी बात है
दिल के टूटने वाला

हताश और निराश हो जाता है
उसका तन और मन
आहत हो जाता है
विरह की वेदना से
उसका दिल और दिमाग़
विचलित हो जाता है
उसकी रूह तार-तार होकर
जख़्मी हो जाती है
इसलिये वो चाहता है कि
किसी इन्सान का तो क्या
किसी हैवान और शैतान का भी
कोई दिल नहीं तोड़े

हत्या करना

जब हम किसी को
जीवन नहीं दे सकते तो
किसी को मारने का
हमें हक़ भी नहीं है
यह हर कसाई को
मालूम रहता है कि
किसी भी जीव की
निर्मम हत्या करना
बहुत बुरी बात है
इसलिये हर कसाई
यह चाहता है कि
उसकी सन्तानें
यह रोजगार नहीं करे

सैनिक-सिपाही

हर सैनिक
और सिपाही को
ये मालूम रहता है कि
यहाँ काम करना
कितना मुश्क़िल होता है
आंतकवादियों
और अपराधियों की
खतरनाक साजिशों से
हर वक़्त जान का
जोखिम रहता है
सर्दी, गर्मी और बरसात के
बेहद मुश्क़िल
और विपरित
हालातों में सरहद
और देश में चौकस
और चौकन्ना होकर
काम को फ़र्ज़ समझकर
मेहनत और ईमानदारी से
सत्यनिष्ठा से करना पड़ता है
इसलिये हर एक
सैनिक और सिपाही
दिल से यह चाहता है कि
उसकी नालायक
और बेरोजगार सन्तानें भी
सेना और पुलिस की नौकरी
किसी भी सूरत में नहीं करे

लेखन कर्म

हर लेखक को
यह मालूम होता है कि
लेखन कार्य से
जीवन यापन करना
कितना मुश्क़िल होता है
बहुत ज़रूरी दैनिक
आवश्यकताओं के लिये भी
अभावों में जीना पड़ता है
तौहिन और जलालत से
हर रोज जलील होना पड़ता है
इसलिये हर लेखक
यह चाहता है कि
उसकी बेरोजगार सन्ताने भी
लेखन कार्य को
अपना पेशा नहीं बनायें

रोजगार

हर एक बेरोजगार को
ये बहुत अच्छी तरह से
मालूम रहता है कि
पढ़ लिखकर भी
बिना काम के रहना
कितना मुश्क़िल होता है
छोटी-छोटी आवश्यक
ज़रूरतों के लिये भी
दूसरों पर निर्भर रहकर
तौहीन और ज़लालत से

ज़लील होना पड़ता है
ज़िन्दगी मौत से भी
बदतर लगने लगती है
बेरहम ख़ुदकुशी करके
ज़िन्दगी को ख़त्म करना
ज़्यादा अच्छा लगता है
इसलिये हर बेरोजगार
ये चाहता है कि
उसकी अयोग्य सन्तान भी
बेरोजगार नहीं रहे।

पुरखों की विरासत

प्रकृति

यह सुन्दर प्रकृति
जिसमें हवा-पानी,
पेड़-पौधे, नदी, झरने,
पहाड़, जंगल, ज़मीन,
आसमान, जीव-जन्तु
आदि अनादि काल से
हमारे पूर्वजों की
अनमोल जमा पूँजी है
जो उन्होंने हमें
विरासत में सौंपी है

अगर हम जमा पूँजी को
सुरक्षित नहीं रखते
उसमें वृद्धि नहीं करते
और अन्धा धुन्ध दोहन करके
बेहिसाब खर्च करते है
तो फिर एक दिन ज़रूर
हम कंगाल हो जायेंगे
क्योंकि एक दिन तो
कुबेर का खजाना भी
खाली हो जाता है

अगर खजाने में
कुछ नहीं डाला जाये तो

वतन

हमारा वतन
हमारे पूर्वजों की
बेशकीमती अमानत है
जिसे हमारे पुरखों ने
अपनी शहादत
और कुर्बानी देकर
हमारे लिये सुरक्षित रखा है
ताकि हम अम्न और अमान
चैन और सुक़ून से रह सके

हमारा यह फ़र्ज़
और ज़िम्मेदारी है कि
हम हर हालात में
मज़हब, गिले शिकवे,
शक़ और शिकायतें
और रंजो ग़म भूलकर
वतन की हिफ़ाज़त करें
वर्ना हम फिर से
दूसरे देश के गुलाम होकर
धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक
रूप से तबाह हो जायेंगे
अगर हम वतन की
हिफ़ाज़त के लिये
कुछ नहीं कर पाये

तो कम से कम
वतन से वेवफ़ाई तो न करें
और हिफ़ाज़त करने वालों को
नाजायज़ परेशान नहीं करें

मज़हब

हमारे मज़हब
हमारे पुरखों की
समृद्ध धरोहर है
जिसे उन्होंने बहुत सोच समझकर
बनाया और अपनाया था

हमारा यह नैतिक
उत्तरदायित्व है कि
हम हर हालात में
धर्म की रक्षा करें
तन और मन से मानें
दिलो दिमाग़ से स्वीकार करें
लालच में और डरकर
अपना मज़हब नहीं बदलें
वर्ना हमारी संस्कृति,
संस्कार, रीति रिवाज,
रिश्ते-नातें, तीज-त्यौहार,
ख़त्म हो जायेंगे
इस प्रकार हमारा
सामाजिक और धार्मिक
जीवन का पतन होकर
हम तबाह हो जायेंगे

साहित्य

हमारे ग्रन्थ
और साहित्य
हमारे पुरखों की
अनमोल सम्पदा
और नसीहत है
जो हमें मर्यादित,
सहज और सरल
निर्मल और पवित्र
विनम्र और समानता
क्षमा और वीरता
इन्सानियत और नीति
नैकी और भलाई
उत्साह और उमंग
आनन्द और समरसता
भाईचारे और प्रेम
ज्ञान और विज्ञान
स्वस्थ और निरोगी
दिर्घायु जीवन, ममता
करूणा और स्नेह
इत्यादि से ख़ुशहाल
सामाजिक और पारिवारिक
जीवन जीना सिखाते हैं

इसलिये हमारा फ़र्ज़ है कि
हम ग्रन्थों और साहित्य को
हर हालात में सुरक्षित रखकर
नियमित अध्ययन करके

चिन्तन और मनन करके
तन और मन से मन्थन करके
अपने सामाजिक, धार्मिक,
पारिवारिक और आर्थिक
जीवन को ख़ुशहाल बनायें

त्यौहार

हमारे त्यौहार
हमारे पूर्वजों की
अनमोल धरोहर है
ये त्यौहार हमें
प्रकृति, मौसम, समाज,
भाईचारा और परिवार से
उचित तालमेल रखकर
उत्साह और उमंग से
स्वस्थ और निरोगी होकर
ख़ुशहाल और दिर्धायु
जीवन जीना सिखाते हैं

इसलिये हमारा
यह फ़र्ज़ है कि
हम त्यौहारों को
मूल स्वरूप में सहजता,
सरलता, निर्मलता, पवित्रता
और भाईचारे से मिलकर
उत्साह और उमंग से मनायें
ताकि हमारे जीवन में
त्यौहारों का सार्थक उद्देश्य
और गौरव तन मन में बना रहे

संस्कृति और संस्कार

हमारा पहनावा, वेशभूषा,
जीवन शैली, खान-पान,
रहन-सहन, शृंगार, आभूषण,
रीति रिवाजों के संस्कार
आचार विचार और संस्कृति
हमारे पुरखों द्वारा की गई
सदियों की सार्थक खोज
और निष्कर्ष के परिणाम हैं

ताकि भौगोलिक दृष्टिकोण को
जीवन में मध्य नज़र रखते हुये
स्थानीय रूप से आसानी से
उपलब्ध साधनों और संसाधनों से
हमारा सामाजिक और आर्थिक जीवन
सहजता और सरलता से ख़ुशहाल रहे

इसलिये हम सभी का
ये नैतिक दायित्व बनता है कि
अपनी संस्कृति और संस्कारों को
हर हालात में सुरक्षित रखें

हम पश्चिम की तथा कथित
आधुनिक संस्कृति की
बिना सोचे और समझे
अन्धा धुन्ध नकल नहीं करें
ताकि हमारी संस्कृति और संस्कार
फूहड़ता और अश्लीलता से
बेइज़्ज़त और बेआबरू नहीं हो

गीत संगीत और नृत्य

हमारे लोक गीत,
संगीत और नृत्य
हमारे पुरखों की
अनमोल विरासत है
जो हर अँचल के
लोक मानस में रचे बसे हैं
जो हमारे तन और मन को
सहज और सरल करके
शारीरिक और मानसिक रूप से
चैन और सुक़ून से आनन्दित करते हैं

इसलिये हम सबका
यह परम कर्तव्य बनता है कि
इस अनमोल विरासत को
दिल और दिमाग़ में
अच्छी तरह से सहेज कर रखें
विदेशी संस्कृति की नकल करके
हमारे लोक गीतों, संगीत
और नृत्य को नष्ट होने से बचायें

भाषा

हमारी मातृ भाषायें
हमारे पूर्वजों की
अनमोल धरोहर है
जो सदियों से
उनके गहन अध्ययन,
चिन्तन और मनन के

मन्थन से विकसित
और समृद्ध होकर
हमारे विचारों, ज़रूरतों
और भावनाओं की अभिव्यक्ति को
एक दूसरे तक पहुँचाकर
हमारे सामाजिक जीवन को
सहज और सरल बनाती है
इसलिये हम सबका
यह नैतिक दायित्व बनता है कि
सभी मातृ भाषाओं को
सहेज कर सुरक्षित रखें
और अपनी सन्तानों को भी सिखायें

देश और विदेश के
ज्ञान को प्राप्त करने
और रोजगार के लिये
देश की दूसरी भाषाओं
और विदेशी भाषाओं को
सीखना अनिवार्य होता है
इसका मतलब यह नहीं है कि
इस वजह से हम
हमारी मातृभाषा को भूल जायें।

ज़िन्दगी

ईमान

बेख़ौफ दिलो-दिमाग़ से
जोश और जुनून से
हौंसलों की उड़ान से
नील गगन में मेहनत से
कामयाबी की रोशनी में
ईमान की ख़ुशहाली से
खिलखिलाती ज़िंदगी

सपने

ख़्वाबों और ख़यालों से
कुछ अनकहे अक्षरों से
जीवन के सफ़र को
फ़लसफ़ा बनाती ज़िन्दगी

मेहनत

कोशिशों के क़दमों से
मेहनत और ईमानदारी से
हर रोज क़दमताल करके
हमें राहे दिखाती ज़िन्दगी

उम्मीद

मुसीबतों और चुनौतियों की
समस्याओं का समाधान करके
उम्मीदों के साथ हँसकर
असफलता और निराशा का
आशा से मुँह चिढ़ाती ज़िन्दगी

समाधान

अगर कोई समस्या है तो
हर समस्या का समाधान भी है
हर मुश्क़िल सवालों को
जवाबों से उड़ाती ज़िंदगी

कोशिश

थक हार कर
रुक जाना नहीं
जीवन तो सिर्फ़
चलने का ही नाम
जीवन में हार कर
या फिर जीत कर
आगे बढ़ जाती ज़िन्दगी

यादें

मिलना-जुलना
और बिछुड़ जाना
जीवन तो सिर्फ़
भूली-बिसरी यादों का मेला

जीवन के हर मोड़ पर
नये रिश्ते बनाती ज़िन्दगी

आशा

चलना, गिरना, उठना
और फिर संभल कर
कामयाबी के लिये
लगातार कोशिशें करते रहना
संभावनाओं की ज़मीन पर
जीवन के उपवन में
मेहनत से सतरंगी
महकते फूल खिलाती ज़िन्दगी

अपने-पराये

कौन अपना है
कौन पराया है
वक़्त ने वक़्त पर
यह समझाया है
ऐसे अपनों के साथ
वक़्त, वक़्त पर
रोती व मुस्कुराती ज़िन्दगी

मिसाल

नामुमक़िन को
मुमक़िन कर दे
हर मुश्क़िल को
आसान कर दे

ऐसे मिसाल का
यादगार जीवन
बेमिसाल बनाती ज़िन्दगी

सफ़र

मंजिल तो मौत है
और जीवन सफ़र है
इसलिये तो मन्जिल नहीं
सफ़र कहलाती ज़िन्दगी

वक़्त

समय बहुत बलवान है
समय ने राजा को रंक
और रंक को राजा
बनते हुये देखा है
इसलिये अच्छे-अच्छे
ताक़तवर शूरमाओं को
धूल चटाती ज़िन्दगी

परिवर्तन

बनना, सवंरना
और उजड़ जाना
परिवर्तन प्रकृति का
एक शाश्वत नियम है
इसलिये काल चक्र से
मज़बूत से मज़बूत
निर्माण को मिट्टी में
मिलाकर मिटाती ज़िन्दगी

अधूरा जीवन

बिना औरत के
यह जीवन अधूरा है
औरत के दामन में
हर रिश्ते से आबाद
ख़ुशहाल ज़माना है
संसार को औरत की
हक़ीकत और अहमियत
समझाकर बताती ज़िन्दगी

शर्मिली

शर्मो हया का गहना
जिसे हर नारी ने पहना
लाज और शर्म से
पानी-पानी होकर
ख़ुद से शरमाती ज़िन्दगी

परेशान

ख़ास अपनों की
ख़ुदगर्ज़ी और बेवफ़ाई
बेरहम ज़माने के
जुल्म और सितम
दिल की हैरानी
और परेशानी से
ख़ुद मज़बूर होकर
लड़खड़ाती ज़िन्दगी

शिकायतें

मतलब की यह दुनिया
किसी की भी सगी नहीं
हर एक रिश्ते की
अपनी-अपनी ज़रूरतें
किसी की उम्मीद पर
खरा नहीं उतरो तो
खास अपने रिश्ते के भी
अपनी औकात पर आकर
गिले-शिकवे, शिकायतें
और ताने सुनाती ज़िन्दगी

नामुमक़िन

अनहोनी की होनी में
जहाँ जीना मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन ही होता है
वहाँ पर ज़िन्दा रह जाना
मौत से जंग लड़कर
मौत का मुँह चिढ़ाती ज़िन्दगी

हक़ीक़त

सच तो सच ही होता है
मगर कानों से सुना हुआ
झूठा हो सकता है
आँखों से देखा हुआ भी
झूठा हो सकता है
इसलिये सच को

वक़्त-वक़्त पर
सच की हक़ीकत
बताती और दिखाती ज़िन्दगी

निर्मलता

अगर उम्र दराज
गंभीर, तुजुर्बेदार और
ज़िम्मेदार इन्सान में
नटखट, चंचल, भोला
और मासूम बचपन है तो
हँसी-मजाक और शरारत से
गम्भीर जीवन को भी
सहज और सरल होकर
तन-मन और दिलो दिमाग़ को
निर्मल और पवित्र बनाती ज़िन्दगी

तबाही

ईर्ष्या की अगन
रंजिश की जलन
नफ़रत की आग में
तन मन से जलकर
ख़ुद की तबाही से
ज़लालत दिखाती ज़िन्दगी

संतुष्टि

इच्छाओं का अंत नहीं
और तमन्नायें अनंत है

मेहनत और ईमानदारी
और ईश्वर की कृपा से
जो कुछ भी मिल जाये
उससे संतुष्ट होकर
सब्र से ही जीवन को
ख़ुशहाल बनाती ज़िन्दगी

क़ीमत

दौलत से भी ज़्यादा
ज़ुबान की क़ीमत होती है
कसम और वचन देकर के
वक़्त पर नहीं निभाये
तो ख़ुद उस इन्सान को
तौहीन और ज़लालत से
सरे आम बेईज्ज़त करके
थूक कर चटाती ज़िन्दगी

मोहमाया

सबको मालूम है कि
एक दिन सब कुछ
यहीं पर छोड़कर जाना है
फिर भी अपना
दीन और ईमान खोकर
मोहमाया में जकड़ कर
सहज-सरल जीवन को
जेल बनाती ज़िन्दगी

अद्‌भूत दृश्य

जब सब कुछ दिखाई देता है
तब ईश्वर दिखाई नहीं देता
जब कुछ भी दिखाई नहीं देता
तब सिर्फ़ ईश्वर ही दिखाई देता है
जीवन में ऐसे अद्‌भूत और अनोखे
दृश्य इन्सान को दिखाती ज़िन्दगी

अंहकार

विश्व विजेता सिकन्दर को
संसार से खाली हाथ भेजकर
हर एक घमण्डी इन्सान को
बहुत कुछ होने के अंहकार
और अभिमान को तोड़कर
सीख और सबक सिखाती ज़िन्दगी

धन-दौलत

आरामदायक जीवन जीकर
महंगे इलाज के बाद भी
आज तक कोई भी इन्सान
संसार में अमर नहीं हुआ
एक दिन वक़्त पर मरकर
अमीरों की धन-दौलत को
बेबस और लाचार बनाती ज़िन्दगी

हृदय परिवर्तन

चक्रवर्ती सम्राट

अशोक महान को
हृदय परिवर्तन से
युद्ध क्षेत्र में घायल
और रक्त रंजित
लाशों को देखकर
एक पल में विरक्त होकर
शाही राज काज छोड़कर
सन्यासी बनाती ज़िन्दगी

बेटी

अपने पिता के
सुनहरे सपनों को
हक़ीकत करने के लिये
हक़ीकत के जीवन को
भूला बिसरा सपना बनाकर
अपना सब कुछ छोड़कर
अपना सम्पूर्ण जीवन
दांव पर लगाकर
बेबस और मज़बूर होकर
बाबुल के घर आँगन से
बेमन से जुदा होकर
ख़ुद की पहचान से ही
पराई हो जाती ज़िन्दगी

चालाकी

अक्सर तैराक की मौत
पानी में ही होती है
चतुर और चालाक को

अपनी ही चतुराई, चालाकी
और होशियारी के
जोश और जुनून से
अक्सर मरवाती ज़िन्दगी

साहूकार

भीड़ में चोर का ही
चोर-चोर चिल्लाना
और चोर को पकड़ने में
भरपूर सहयोग करना
चोर को भी भीड़ में
साहूकार बनाती ज़िन्दगी

प्रतिशोध

मान सम्मान से
प्रताड़ित होकर
अपमान से जलकर
प्रतिशोध की अग्नि में
विद्रोह की आग से
त्याग और तपस्या में
तन और मन को तपाकर
न कुछ ग़रीब ग्वाले के बच्चे
चन्द्र गुप्त मौर्य को
चक्रवर्ती सम्राट बनाती ज़िन्दगी

मोहमाया

जीवन के सच को जानकर
सांसारिक मोहमाया से

एक पल में विरक्त होकर
शाही राज पाट त्यागकर
चक्रवर्ती सम्राट सिद्धार्थ गौतम को
महात्मा बुद्ध बनाती ज़िन्दगी

नाइंसाफ़ी

ज़हर के घूँट पी लेना
आँखों को शर्म से
अन्धा कर लेना
आँखों देखी जुबान का
बेजुबान हो जाना
बेबस होकर ख़ुदकुशी कर लेना
ऐसी मज़बूरी और लाचारी
सच और हक़ीकत के
चीखते सुबूतों और गवाहों को
इन्साफ़ के मन्दिर में
ख़ामोश बनाती ज़िन्दगी

लाचारी

कभी विलासता के जीवन में
तो कभी नाज़ायज़ ख़्वाहिशों में
तो कभी परिवार की ज़रूरतों
और पापी पेट के सवालों में
या फिर नापाक साज़िशों के
चक्र व्यूह में शिकार होकर
पढ़ाई लिखाई और सुन्दरता को
मज़बूरी में तवायफ़ बनाती ज़िन्दगी

ख़्वाहिशें

ऐश और आराम के
विलासता के जीवन में
नाज़ायज़ तमन्नाओं में
आय से अधिक खर्च करके
क़र्ज़ के बोझ तले दबकर
किश्तों की जंजीरों से
ब्याज़ के नागपाश में जकड़कर
सरेआम बेआबरू होकर
ख़ुदकुशी से मौत को
गले लगाती ज़िन्दगी

सीख और सबक

कभी अपनी ग़लती से
तो कभी अपनों की
मक्कारी और ख़ुदगर्ज़ी से
या फिर औरों की चालाकियों से
वक़्त-वक़्त पर ठोकरे खाकर
सम्भलने और सुधरने की
सीख और सबक लेकर
ख़ुद को ही दिलो-दिमाग से
अनुभवी शिक्षक बनाती ज़िन्दगी

मौत का सामान

बेरोजगारी में
पापी पेट का सवाल
या ऐशो आराम में

विलासता के जीवन से
गुनाहों के दलदल में फँसकर
संगीन जुर्म ही जीवन होकर
अपने तन-मन को जेल बनाकर
तौहीन और ज़लालत को
मौत का सामान बनाती ज़िन्दगी

घास की रोटी

देश और धर्म
मान और सम्मान की
रक्षा की ख़ातिर
शाही महलों की
सुख-सुविधा छोड़कर
महाराणा प्रताप को
वनवासी के जीवन में
जंगलों में दर-दर भटक कर
घास की रोटी खिलाती ज़िन्दगी

जानवरों से बदतर

अगर कोई इन्सान
बेबस और लाचार होकर
धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक
और मानसिक प्रताड़ना और अत्याचारों से
असहाय निर्धन इन्सान का
अभाव ग्रस्त जीवन जी रहा है तो
इन्सान की जानवरों से भी बदतर
और बदनसीब कहलाती ज़िन्दगी

अधूरी ख़्वाहिशें

संतोषी सदा सुखी रहता है
असंतोषी की मृग तृष्णा,
अधूरी ख़्वाहिशें और तमन्नायें
असंतोषी को लोभ-लालच
और कंजूसी से अभावों में
उम्र भर के लिये दीन-हीन
निर्धन और कंगाल बनाती ज़िन्दगी

धर्म परिवर्तन

कायर, डरपोक, चालाक
ख़ुदगर्ज़ और मक्कार को
धन-दौलत, पद और सत्ता के
लोभ और लालच में इन्सान का
धर्म परिवर्तन करवाती ज़िन्दगी

गुनाहों के निशान

गुनाहगार कितना ही
चालाक, शातिर, अक़्लमंद
और ताकतवर ही क्यों न हो
अपने गुनाहों के निशान
किसी न किसी रूप में
छोड़ ही तो जाता है
पांच सौ वर्ष बाद भी
मंदिर के दफ़्न हुये अवशेषों के
सुबूतों और गवाहों से
मंदिर का निर्माण करवाती ज़िन्दगी

एक बूंद

कोख में गर्भ धारण से
सिर्फ़ एक बूंद को
छह इंच का
जीवन्त जीव बनाकर
जीवन के सफ़र में
छह फुट का
जीव बनाती ज़िन्दगी

भैंस के आगे

संसार में
दो ही तरह के इन्सान है
या तो इन्सान समझदार है
या फिर नासमझ है
समझदार को भी
समझाना मुश्क़िल
और नासमझ को भी
समझाना मुश्क़िल
जब दोनों को ही
समझाना मुश्क़िल है तो
फिर तो तमाम उम्र
भैंस के आगे
बीन बजाती ज़िन्दगी

इन्सानियत

आस्था में कण-कण
मनोकामनाओं में मन्नतें

और अधूरी ख़्वाहिशें
ग़रीब के लिये दौलत
परेशानी में आसानी
बेऔलाद के लिये संतान
अनाथ के लिये माता-पिता
बेघर के लिये घर
सुहागन के लिये सुहाग
बीमारी में इलाज
दु:ख में सुख
दम तोड़ते प्यासे को पानी
भूख से मरते को सूखी रोटी
मंदिरों में चोरियाँ
मंदिरों में अस्मत का लुटना
दाता के दर पर भिखारी
जीवन में ऐसे
बहुत सारे उलझे सवालों से
इन्सानियत के होने
और नहीं होने के
वजूद को हर पल
सारी उम्र के लिये
दिमाग़ में उठाती ज़िन्दगी

इन्सानियत

सावन में पतझड़
समंदर में बारिश
बेगुनाही के सुबूत
शजर में सहरा
क़तरा-क़तरा दरिया

अमावस का चाँद
संतान की कातिल माँ
गुलों का लुटेरा बागवान
पत्नी का सौदागर पति
गुरु दक्षिणा में
तीरंदाज का अंगूठा
अपनों के सामने
अपनों के द्वारा चीर हरण
इच्छित मृत्यु का
शर शैया पर
मर-मर कर जीना
भक्त प्रहलाद का
अग्नि में नहीं जलना
चक्रवर्ती सम्राटों का
मोहमाया से विरक्त होकर
वीतरागी संन्यासी बनना
जीवन में ऐसे
बहुत सारे
उलझे सवालों से
इन्सानियत के होने
और नहीं होने के
वजूद को हर पल
सारी उम्र के लिये
दिमाग़ में उठाती ज़िन्दगी

इन्सानियत

ख़ुद को बद्दुआये
एकलव्य का अंगूठा

दो मिनट का मौन
इलाज ही बीमार
मरने के बाद अमृत
अज्ञातवास की बेबसी
जीवन ही जेल
चल्लू भर पानी में
जंजीरों में हवा
ख़ामोश निगाहे
जुदाई के जज़्बात
तन्हाई के तसव्वुर
विरह की वेदना
मुहब्बत एक इबादत
मुहब्बत शजर का फ़लसफ़ा
कैंसर के पांचवें हालात
गिरेबान में झांक कर
जीवन में ऐसे
बहुत सारे
उलझे सवालों से
इन्सानियत के होने
और नहीं होने के
वजूद को हर पल
सारी उम्र के लिये
दिमाग़ में उठाती ज़िन्दगी

इन्सानियत

होनी में अनहोनी
और अनहोनी में होनी
कहीं पर छप्पन भोग

और कहीं पर भूख से मौत
आलिशान मकानों में वीरानी
और करोड़ों इन्सानों का
बदहाल जीवन फुटपाथों पर
ज़िगर के टुकड़े को बेचना
दहेज की चिताओं पर बेटियाँ
देर रात तक ढाबों पर
झूठन धोता मासूम बचपन
समर्थ बेटा-बहू के होते हुये
अनाथ आश्रमों में माता-पिता
सूनी कलाई और सूना आँगन
भरी जवानी में बिना संतान विधवा
आँखों देखी झूठी होना
सुकरात को जहर का प्याला
नौ सौ चूहे खाकर हज को जाना
सीता की अग्नि परीक्षा
जीवन में ऐसे
बहुत सारे
उलझे सवालों से
इन्सानियत के होने
और नहीं होने के
वजूद को हर पल
सारी उम्र के लिये
दिमाग़ में उठाती ज़िन्दगी

इन्सानियत

बेजुबान तसव्वुर
मन का संसार

दिल की पुकार
बेटी का सौदागर पिता
अपने ही अस्मत के लुटेरे
चराग़ तले अँधेरा
स्वर्ग-नर्क की अवधारणा
जीते जी नर्क,
मरने के बाद स्वर्ग
अगला और पिछला जन्म
भाई-भाई खून के प्यासे
ख़ुद के ही बदन का सौदा
सूखी रोटी की चोरी
अनमोल पानी का मोल
शर्म से पानी-पानी होना
ख़ून का पानी होना
पीठ पर वार
मुँह में राम, बगल में छुरी
आम के पेड़ पर काँटे
जीवन में ऐसे बहुत सारे
उलझे सवालों से
इन्सानियत के होने
और नहीं होने के
वजूद को हर पल
सारी उम्र के लिये
दिमाग़ में उठाती ज़िन्दगी

तिनके का सहारा

हताश और निराश
हैरान और परेशान को

हमदर्दी के दो बोल
ज़रूरतमंद को वक़्त पर मदद
प्यासे को दो बूंद पानी
भूखे को सूखी रोटी
निसंतान और निर्धन
असहाय बुजुर्ग के लिये
मामूली सी वृद्धावस्था पेंशन
लाइलाज रोग से मरते हुये को
डॉक्टर की ठीक होने की सांत्वना
सुनसान और अँधेरी
काली रातों के सफ़र में
बहुत दूर टिमटिमाती
रोशनी की एक किरण
दम तोड़ते हुये को
चन्द मिनट की सांसे
निर्धन बेघर के लिए
ख़स्ताहाल जर्जर मकान
बेऔलाद के लिये
एक अपाहिज सन्तान
जुदाई और तन्हाई के
बेसब्र इंतज़ार से
विरह की वेदना में
बेचैनी से तड़पते हुये को
दूर दराज से
अपनों के आने का
आधा अधूरा सन्देश
यह सबके सब हालात
डूबते हुये असहाय और बेबस को
तिनके का सहारा कहलाती ज़िन्दगी

अनुभव की किताब

दुख और सुख के दिन
अच्छे और बुरे हालात
खट्टे और मिट्टे अनुभव
मौसम और ऋतुये
रीति, रिवाज़ और संस्कार
रिश्ते और नाते
प्यार और मुहब्बत
सहयोग और सदभावना
रंजिश और नफ़रत
दोस्ती और दुश्मनी
ख़ुदगर्ज़ी और चालाकी
इत्यादि की सीख
और सबक देकर
अनुभव की किताब कहलाती ज़िन्दगी

जीवन सफ़र

बचपन का नटखट
और मासूम भोलापन
जवानी की मस्ती
और जोश व जुनून
अधेड़ अवस्था की गंभीरता
और अधूरी ज़िम्मेदारियाँ
बुढ़ापे के अनुभव में
सारी उम्र भर का सार
जीवन का सफ़र कहलाती ज़िन्दगी

पानी में जीवन

कोख में जीव आत्मा
भूगर्भ का पानी है
जीव आत्मा का जन्म
पानी का उद्‌गम है
बचपन का भोलापन
बहते पानी का झरना है
यौवन की चंचलता और मस्ती
नदी की लहरों में
रवानी और रफ़्तार है
जवानी की दास्तान
जोश और जुनून में
उफनता हुआ एक दरिया है
अधेड़ अवस्था की गंभीरता
पानी की शांत और गहरी झील है
बुढ़ापे के अनुभव में ज्ञान का
गहरा और विशाल सागर
पानी के वाष्पीकरण से
एक बादल बन जाना
इन्सान की जीव आत्मा का
परमात्मा में विलीन हो जाना है
रहस्यमय बादलों की घटाओं से
फिर से पानी की बारिश होना
आत्मा का फिर से
पुनर्जन्म है
इसलिये जीव आत्मा का जीवन
पानी का सफ़र कहलाती ज़िन्दगी

मोक्ष का मार्ग

सिर्फ़ ज़िन्दा रहने के लायक
सात्विक भोजन करना
तन ढकने के लिये
संस्कारी, सभ्य और
सस्ते कपड़े पहनना
सर छुपाने के लिये
सामान्य सुविधा का
सिर्फ़ एक मकान होना
अतिआवश्यक ज़रूरतों के लिये
नैतिक और मूल्यवान
रोजगार और व्यापार करना
बुजुर्गों का आदर-सत्कार करना
छोटो को प्यार-मुहब्बत करना
रिश्तों का मान-सम्मान रखना
सांसारिक जीवन के सफ़र में
सदाचार, सहयोग, सद्‌भावना,
हमदर्दी, इंसानियत, कर्तव्य,
उत्तरदायित्व, ज़िम्मेदारी,
शराफ़त, समझदारी, भलाई,
नैतिक आचरण,
दीनो ईमान से
तन-मन की पवित्रता से
सहजता, सरलता, निर्मलता से
इन्सान के सांसारिक जीवन को
मोक्ष का सरल और आसान
सीधा-सादा मार्ग कहलाती ज़िन्दगी

भरोसा-विश्वास

दूसरों पर यक़ीन करना तो
बहुत दूर की बात है
कभी-कभी अपनी वजह से
या फिर दूसरों की वजह से
हालात ऐसे हो जाते है कि
ख़ुद अपनी आँखों से देखे हुये
या अपनी ज़ुबान से कहे हुये
या फिर अपने किये हुये पर भी
यकीन नहीं करवाती ज़िन्दगी

ख़ुदा से बढ़कर माँ

नौ महीने कोख में
अपने ख़ून से सींच कर
पैदा होने के बाद
अपने आँचल के पोषण से
ममता और करुणा के
अहसास से दूध पिलाकर
दिन-रात गन्दगी साफ करके
हर तरह की विपरीत
और कठिन परिस्थितियों में भी
बच्चों की कुशल परवरिश करके
बच्चों का भविष्य बनाने के लिये
अपना भविष्य दाँव पर लगाकर
ख़ुद भूखी-प्यासी रहकर
बच्चों को हर तरह से
तमाम उम्र तन-मन से
सुखी और संतुष्ट रखकर

त्याग, तपस्या, करुणा,
प्यार, ममता और स्नेह से
जीवन में ख़ुदा से भी बढ़कर
अहमियत से सिर्फ़ और सिर्फ़
एक माँ ही कहलाती ज़िन्दगी

दौलत

दौलत ख़ुदा तो नहीं
मगर ख़ुदा से कम भी नहीं
और बाप बढ़ा न भैया
सबसे बड़ा तो रुपय्या
इसलिए दौलत के लिये
तन-मन और दिलो-दिमाग़ से
सब कुछ दाँव पर लगाकर
सिर्फ़ दौलत ही कहलाती ज़िन्दगी

बाहुबल

धन-दौलत और बाहुबल से
अपनी मनमर्ज़ी और तानाशाही
क्योंकि समर्थ को दोष नहीं मेरे भाई
इसलिये जिसकी लाठी होती है
उसकी भैंस कहलाती ज़िन्दगी

पति-पत्नी

नदी के दो उफनते किनारे
जो अपने किनारों को
ख़ुशहाली से आबाद करते हुये

भले ही मृत्यु के सागर में समा जाये
मगर कभी भी नहीं मिलते
फिर भी तमाम उम्र के लिये
पति-पत्नी का अटूट और मजबूत
रिश्तों का बंधन कहलाती ज़िन्दगी

ख़ून का प्यासा

मान और अभिमान में
ज़मीन और जायजाद से
ईर्ष्या, रंजिश और नफ़रत में
लोभ-लालच के मतभेद से
सगे भाइयों और बहनों को भी
ख़ून का प्यासा बनाती ज़िन्दगी

कान की कच्ची

सगे भाई-भाई और बहने
गहरे पक्के पुराने दोस्त
उम्र दराज पति-पत्नी
सगे रिश्ते और नाते
माता-पिता और सन्तानें
वफ़ादार मालिक और नौकर
बरसों पुराने व्यापारिक सम्बंध
मधुर व्यवहार के पड़ौसी
सालों से साथ काम करने वाले
कार्यालय के साथी कर्मचारी
दीवानगी की हद तक
एक साथ जीने-मरने वाले

प्रेमी और प्रेमिकायें
किसी के बहकावे में आकर
मनमुटाव से रिश्ते तोड़कर
कान की कच्ची कहलाती ज़िन्दगी

गीत-संगीत

मन की वीणा के तारों को
इतना भी मत कसो कि
जीवन की झंकार टूट जाये
मन की वीणा के तारों को
इतना ढीला भी मत करो कि
मन का सितार बज ही नहीं पाये
जीवन में दु:ख और सुख के
दर्दो-ग़म और जोशो-जुनून के
उत्साह, उमंग औ आनंद के
परेशानी और समाधान के
नृत्य, सुर और ताल में
समन्वय और सन्तुलन बनाकर
गीत और संगीत कहलाती ज़िन्दगी

रचना

भावों के उमंग में
विचारों के तरंग से
कलम के प्रवाह से
गीत, ग़ज़ल, कहानी,
दोहे, चौपाई, यात्रा वृतांत,
निबंध, आत्म कथा, छंद,
कविता और उपन्यास से

रचनाकर्म में रचनाकार की
कठिन तन-मन की साधना से
जीवन्त रचना कहलाती ज़िन्दगी

बेगुनाही के सुबूत

आँखों से बहते हुये अश्क़ है
ज़ुबान बेबस होकर बेज़ुबान है
तन और मन में लाचारी है
दिमाग़ में ज़लालत का गुबार है
जीवन में ऐसे मज़बूर हालात
बेगुनाही के सुबूत कहलाती ज़िन्दगी

समंदर में बारिश

कहीं पर दाने-दाने को मोहताज
ग़रीबी भूख से जंग लड़ रही है
कहीं पर बेहिसाब धन-दौलत
तिजौरी में बढ़कर सड़ रही है
प्यासी ज़मीन को तड़पा-तड़पाकर
समंदर में बारिश करवाती ज़िन्दगी

जीवन एक जंग

जो डर गया वो हार गया
डर के आगे ही तो जीत है
वैसे जंग में सब कुछ जायज़ है
इसलिए जो जीता वही सिकंदर है
जीत कर भी हार मान लेना
ऐसी हार ही तो असल में जीत है

शहसवार ही गिरते हैं मैदाने-जंग में
जीवन में इस तरह के हालातों से
जीत-हार की जंग कहलाती ज़िन्दगी

श्मशान

ख़ुद अपने आपको को
बददुआयें देकर के जीना
ज़िन्दगी बेजान कन्धों पर
एक लाश की तरह से
वफ़ाओं के बदले में जफ़ायें
जीने का कोई भी मक़सद नहीं
बेरहम ख़ुदकुशी की ख़्वाहिशें
बच्चों का बदतमीज, बदचलन
घमण्डी और नालायक हो जाना
दो वक़्त की रूखी और सूखी
रोटी का मुँह में निवाला भी नहीं
बेरहम और बदनसीब बुरे वक़्त का
कोई तिनके जैसा सहारा भी नहीं
ऐसे हालातों से श्मशान कहलाती ज़िन्दगी

लगन

मेहनत, ईमानदारी, त्याग, तपस्या,
भक्ति, सम्पर्ण, श्रद्धा,
भरोसा और विश्वास से
बिना गुरू के ज्ञान के भी
असहाय दलित एकलव्य को
लगन से संसार का सर्वश्रेष्ठ
धनुर्धर बनाती ज़िन्दगी

ढपोर शंख

थोथा चना बाजे घना
गरजने वाले बादल
कभी भी बरसते नहीं
भौंकने वाले कुत्ते
कभी भी काटते नहीं
अपनी गली में तो
कुत्ता भी शेर होता है
घर में नहीं है दाने
अम्मा चली है भुनाने
हाथी के दाँत खाने के और
दिखाने के लिये कुछ और
सियार का रंगा सियार होना
ऐसे नादान और नासमझ की
ढपोर शंख कहलाती ज़िन्दगी

अर्श से फ़र्श पर

क़िस्मत और रहमो-करम से
मिली हुई कामयाबी में
इन्सान का दिमाग
मान और अभिमान से
सातवें आसमान पर
गर्दिश के बुरे दिनों में
बिना मेहनत से बनी
कामयाबी की सीढ़ियों बिना
आसमान से ज़मीन पर
औंधे मुँह गिराती ज़िन्दगी

जगहंसाई

ईर्ष्या और ख़ुदगर्ज़ी
सुपात्र और होनहार को भी
चालाकी, बेईमानी
और मक्कारी से
गुरु शिष्य के पवित्र रिश्ते को
अपमान और जगहंसाई से
एकलव्य का अंगूठा
बनाती ज़िन्दगी

मोम का दिल

हैवान और शैतान
पत्थर दिल इन्सान में
शराफ़त, इंसानियत,
प्यार और विश्वास से
मासूम मोम का दिल
इस तरह बबूल के पेड़ पर
रसीले आम लगाती ज़िन्दगी

नर्क

हर रोज पल-पल
मर-मरकर के जीना
बेरहम ख़ुदकुशी की
दिली तमन्नायें रखना
नर्क से भी बदहाल, बुरी
और बदतर कहलाती ज़िन्दगी

जादू-टोना

ख़ुद पर भरोसा नहीं
मेहनत से कर्म करना नहीं
दिल में जोश और जुनून नहीं
मन में उत्साह और उमंग नहीं
कर्म के फल पर विश्वास नहीं
कामयाबी के लिये ईमानदारी
और लगन से कोशिशें नहीं
दिमाग़ में हताशा और निराशा
तन में बेचैनी और परेशानी
जीवन को जादू-टोना, तंत्र-मंत्र
और टोटका बनाती ज़िन्दगी

अनहोनी

बीते हुये कल को
भुगत कर देख लिया
वर्तमान आँखों के सामने है
आने वाले कल में
कुछ भी बुरा नहीं हो
या फिर बुरा भी
बहुत अच्छा हो जाये
इन्सान की यह अभिलाषा,
फ़ितरत, कैफ़ियत और सोच
भविष्य कहलाती ज़िन्दगी

चरित्र

बुरा करने की योग्यता नहीं है
बुरा करने की क्षमता भी नहीं है

इसलिये इन्सान चाहकर भी
दूसरों का बुरा नहीं कर पाते
इसलिये बुरा भी अच्छा ही है

बुरा करने की योग्यता है
बुरा करने की क्षमता भी है
और बुरा करते भी है
इसलिये बुरा, बुरा ही है

बुरा करने की योग्यता भी है
बुरा करने की क्षमता भी है
फिर भी किसी का बुरा नहीं करते
इन्सान का चरित्र बताती ज़िन्दगी

प्लास्टिक

बिस्तर पर पड़े-पड़े
लाइलाज बीमारी से
सड़ और गलकर
बेकार का जीवन
और आख़िरी ख़्वाहिश में
मौत मांगे से भी नहीं मिलती
डायन प्लास्टिक हो जाती ज़िन्दगी

पानी में चरित्र

कुएँ और बावड़ी में पानी
जीवन जेल के समान है
निर्झर झरने के पानी में
जीवन की रवानी और रफ़्तार है

शांत और गहरी झील का पानी
कर्तव्य और ज़िम्मेदारी के
अहसास और विश्वास का ठहराव है
सूखा, बाढ़, तूफान
और मूसलाधार बारिश
जीवन के बुरे हालात है
रिम-झिम सावन की फुहार
जीवन सहज और सरल होकर
हसीन जीवन की दास्तान है
गंगा जल और चरणामृत में पानी
जीवन पूजनीय और आदर्श चरित्र है
गन्दा पानी, ख़राब रहन-सहन
और बुरे चाल चलन से
दुराचारी और अपराधी होकर
इन्सान के जीवन का नैतिक पतन है
गन्दे पानी का साफ़ होना
प्रायश्चित से भूल सुधारकर
और बुराइयों को दूर कर
जीवन में चरित्र का निखार है
पानी का अमृत होना
इन्सान का सद्कर्मों, त्याग,
तपस्या, पुण्य, दीनो-ईमान से
जीवन का अजर-अमर होना है
दम तोड़ते प्यासे की प्यास बुझाना
नर में नारायण की पवित्र सेवा है
उचित उपयोग के लिये पानी देना
असल में दान-पुण्य और परमार्थ है
अनमोल पानी का मोल लेना
अपना दीन और ईमान बेचना है

पानी की चोरी करना
संगीन जुर्म करने के बराबर है
इस तरह से जल का जीवन
पानी का सफ़र कहलाती ज़िन्दगी

ऊर्जा और ऊष्मा

मन में उत्साह और उमंग
दिल में जोश और जुनून
इंसानियत और ईमानदारी
सदभावना के जज़्बात
सहयोग और शराफ़त
सकारात्मक सोच-समझ
सहज और सरल विचार
संस्कार और रस्मो-रिवाज
ज्ञान-विज्ञान और अनुभव
मेहनत और परिश्रम
गीत-संगीत और साहित्य
नेतृत्व कौशल और कला
नैतिक चरित्र का जीवन
सादा जीवन और उच्च विचार
दीन और ईमान का रोज़गार
निर्मल मन से ग़लतियों की
क्षमा मांगना और कर देना
छोटों को प्यार और स्नेह
बुजुर्गों की सेवा और आशीर्वाद
परमपिता परमेश्वर में आस्था
जीवन के सभी रिश्तों में
समर्पण, अहसास और विश्वास

चलायमान और गतिमान
जीवन्त जीवन के लिये
ऊर्जा और ऊष्मा बनकर
तन-मन और दिलो-दिमाग में
'पेट्रोल' जैसा ईधन हो जाती ज़िन्दगी

कबाड़ का गैराज

चलती का नाम गाड़ी
इसलिये चलने का नाम ही
सम्पूर्ण जीवन्त जीवन
नहीं तो गाड़ी की तरह
खड़ी-खड़ी खटारा होकर
इन्सान का अनमोल जीवन
बिस्तर पर बेकार पड़े-पड़े
सड़े-गले कबाड़ का
गैराज हो जाती ज़िन्दगी

सुविधा शुल्क

नाजायज़ को जायज़ करना
जायज़ को नाजायज़ करना
सच को झूठ करना
झूठ को सच करना
काले को सफ़ेद करना
सफ़ेद को काला करना
ईमान को बेईमान करना
बेईमान को ईमान करना
कोरी कल्पना को हक़ीकत
हक़ीकत को कल्पना बनाना

चोर को साहूकार बनाना
साहूकार को चोर बनाना
अमीर को ग़रीब करना
ग़रीब को अमीर करना
अमीर को और अमीर बनाना
ग़रीब को और ग़रीब बनाना
सुविधा शुल्क हो जाती ज़िन्दगी

दिखावटी जीवन

चाय-पानी या शर्बत की जगह
विदेशी महँगे कोल्ड-ड्रिंक्स पीना
नमस्कार की बजाय गुडमोर्निंग
स्वेटर-जर्सी की बजाय
कोट-पेंट और टाई पहनना
पेंट-शर्ट और कुर्ते पजामे,
साड़ी, लहंगा-चुन्नी की जगह
जींस-टी शर्ट और स्कर्ट-टोपर
सामान्य दुकान की जगह
शोरूम से महँगी खरीददारी
अपनी मातृ भाषा की जगह
विदेशी भाषायें, अशुद्ध बोलना
पढ़ना, समझना और लिखना
आसान पर नीचे बैठकर
भोजन करने की बजाय
डाइनिंग टेबल पर भोजन करना
खुली हवा में पंखे-कूलर की बजाय
एयरकंडिशनर का प्रयोग करना
परम्परागत भोजन की जगह

डिब्बा बंद या फ़ास्ट फूड खाना
सामान्य वाहन की जगह
विदेशी महँगे वाहन का प्रयोग
प्राकृतिक सुन्दरता की बजाय
कृत्रिम सौंदर्य साधनों का प्रयोग
असली आभूषणों की जगह
चमकते नकली गहने पहनना
इन्सान की इस तरह की
दिनचर्या और जीवन शैली
जीवन को बनावटी, दिखावटी
और अप्राकृतिक बनाती ज़िन्दगी

जानकर भी अनजान

देखकर भी अनदेखा करना
सुनकर भी अनसुना करना
जानकर भी बेख़बर बने रहना
अपनों को पराया समझना
सोच-विचार करके भी नहीं बोलना
महसूस करके भी स्थिर बने रहना
बुद्धिमान होकर भी मूर्ख बने रहना
भूख लगने पर भी नहीं खाना
प्यासा होने पर भी पानी नहीं पीना
ज़ुबान होकर भी बेज़ुबान बने रहना
रोशन महफ़िल में भी ख़ामोश रहना
बेगुनाह होकर भी गुनाह क़ुबूल करना
दिन को भी रात स्वीकार कर लेना
कंजूस अमीर को अमीर मान लेना
संत के चोले को संत मान लेना

आँखों देखा सच मालूम होने पर भी
कानों सुनी पर विश्वास कर लेना
जिसका जैसा आकार दिखता है
वैसा का वैसा साकार कर लेना
घोषणाओं को हक़ीकत मान लेना
मगरमच्छ के आँसुओं को
असली आँसू मान लेना
नेताओं के वादों, ईरादों
और आश्वासनों को असल में
पूरा होता हुआ मान लेना
जानकर और सोच-समझ भी
अनजान कहलाती ज़िन्दगी

प्रेत आत्मा

जीवन में ख़्वाहिशें, हसरतें
और मनोकामनायें बाकि रहें
और ज़िन्दगी ख़त्म हो जाये
सांसारिक मोहमाया में जकड़कर
तन-मन में अतृप्त ईच्छाओं से
भटकती प्रेत आत्मा हो जाती ज़िन्दगी

पत्थर दिल

हैवान और शैतान
जल्लाद और कसाई
ज़ालिम और सितमगर
बेईमान इन्सान तो
पत्थर दिल होते ही है
हालातों से हैरानी, बेचैनी

निराशा और परेशानी में
बेबस और लाचार होकर
मेहनती और ईमानदार की
सच्चाई और इन्सानियत
पत्थर दिल दास्तान सुनाती ज़िन्दगी

कठपुतली

जिन्हें भरोसा नहीं
अपने तन-मन पर
जिन्हें विश्वास नहीं
अपनी काबिलियत पर
जो दिल और दिमाग़ से
डरपोक और कायर है
वो इन्सान दूसरों के
चालाक और ख़ुदगर्ज़
शातिर ईशारों पर नाचकर
उनके मौका परस्त हाथों से
कठपुतली की नाचती
गुड़िया कहलाती ज़िन्दगी

नमक हराम

मक्कार, चालाक, लालची,
बेईमान, मौका परस्त,
और अहसान फरामोश बनकर
जिस थाली में खाया
उसी थाली में छेद करके
अपने घर का भेदी बनकर
नमक हराम कहलाती ज़िन्दगी

ख़ुद को ख़ुदा

एक अदनी सी बूंद का
ख़ुद को गहरा और विशाल
सागर समझ लेना
हवा के मामूली झौंके का
ख़ुद को तेज आँधी
और तूफान समझ लेना
अपनी गली में कुत्ते का
ख़ुद को शेर समझ लेना
बारिश की फुहार का
ख़ुद को मूसलाधार बारिश समझ लेना
निर्मल और शान्त झरने का
ख़ुद को उफनता हुआ
मचलता दरिया समझ लेना
आधे और अधूरे ज्ञान से
ख़ुद को ज्ञानी समझ लेना
ना कुछ रुपये के दान से
ख़ुद को दानवीर कर्ण समझ लेना
ऐसे नादान और नासमझ
इन्सान की सोच और समझ,
ताकत, बहादुरी और हिम्मत
ख़ुद ही ख़ुदा से बड़ा होकर
समाज में हँसी का पात्र बनकर
बिना सिर पैर की बातों से
सर्कस का जौकर कहलाती ज़िन्दगी

बदनसीब

हाथी पर बैठे हुये को
कुत्ता काट खाये

तैराक की मौत
पानी में हो जाये
धनवान भीख माँगकर
फुटपाथ पर गुज़ारा करे
पढ़ा-लिखा होनहार
बेरोजगारी से बदहाल रहे
अन्नदाता बेबस होकर
भूख से बेमौत मार जाये
हुनरमंद सुशील और सुन्दर
पढ़ी-लिखी होनहार बेटियाँ
दहेज़ से लोभ की चिता पर
बेरहमी से ज़िन्दा जल जायें
साधन-सम्पन्न बेटे-बेटियों के
माता-पिता अनाथ आश्रम में
बदहाल जीवन जीने लग जाये
ऐसे बेबस और बेहाल जीवन से
बदनसीब कहलाती ज़िन्दगी

लाचार और मज़बूर

ज्ञानी, ध्यानी और पण्डित
अज्ञानी, अधर्मी और मूर्ख के
बिना अर्थ के कुतर्कों से
लाचार होकर हार मान जाये
शराफ़त और इन्सानियत,
ज़ालिम, शैतान और हैवान से
परेशान और मज़बूर हो जाये
आँखों से देखा हुआ सच
सबूतों और गहावों के बयान से
सफ़ेद झूठ साबित हो जाये

पति के ज़िन्दा होते हुये
सुहागन के सोलह शृंगार में
अभागन विधवा का जीवन जिये
भरे-पूरे परिवार और मकान में भी
दिलो-दिमाग़ और तन-मन में
श्मशान जैसी तन्हाई और विरानी
ऐसे बेबस और बेहाल जीवन से
लाचार और मज़बूर कहलाती ज़िन्दगी

नई नवेली दुल्हन

तीज और त्यौहारों से
तन और मन में खुशियाँ
उत्साह और उमंग, दिल और दिमाग में
जोश और जुनून
आँगन में सावन की खूबसूरत हरियाली
तन-मन में बसंत के सतरंगी फूलों की फुलवारी
रिश्तों में मधुर अहसास की
महकती ख़ुश्बू की हसीन महक
दिल में अपनेपन के जज़्बात
प्यार और मुहब्बत की रंगत
हँसी-मजाक और शरारत की संगत
इन्सानियत और शराफ़त की सच्चाई
दिलो-दिमाग़ में भाईचारे की भलाई
नौक-जौंक और प्यार से लड़ाई
गिले-शिकवों में अपनेपन की सुनवाई
मन मंदिर में मासूमियत की मिठाई
इन्सान के सामान्य जीवन को
नई नवेली दुल्हन की तरह से
संवारती और सजाती ज़िन्दगी

सच में सच

जब आँखों देखी भी
झूठी हो जाती है
जब सच के सुबूत
और गवाह भी बदल जाते हैं
तब भी आँखों देखा सच
परेशान तो हो सकता है
मगर पराजित नहीं हो सकता
क्योंकि सच में सच
बहुत ताकतवर होता है
इसलिये सच को
सच में दफ़्न करना
मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन होता है
इसलिये क़ुदरत का इन्साफ़
ऐसा प्राकृतिक होता है कि
सच का वक़्त आने पर
सच को सच साबित कर
दूध को दूध और पानी को पानी करके
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का
जीवन्त दर्शन कहलाती ज़िन्दगी

मुखौटा

इन्सान में जानवर
मानव में दानव
देवताओं में राक्षश
अमीर में ग़रीब
दाता में भिखारी

रक्षक में भक्षक
ऐतबार में शक-शंका
ईमान में बेईमान
वफ़ा में बेवफ़ाई
शराफ़त में शैतानियत
मेहनत में मक्कारी
विनम्रता में चापलूसी
इंसानियत में हैवानियत
विश्वास में विश्वासघात
नेकी व भलाई में ख़ुदगर्ज़ी
असली चहरे पर
नकली चहरे का
मुखौटा लगाती ज़िन्दगी

मुखौटा

आँखों में बेशर्मी
लज्जा में निर्लज
अमृत में जहर
आस्तीन में सांप
दोस्त में दुश्मन
साहूकार में चोर
निधान में परेशानी
न्याय में अन्याय
पानी में आग
मदद में अहसान
शराफ़त में खुराफ़ात
सावन में पतझड़
समंदर में बारिश

समाधान में समस्या
पानी में प्यास
रंग में भंग
संगीत में फूटा चंग
चरित्र में दुश्चरित्र
असली चहरे पर
नकली चहरे का
मुखौटा लगाती ज़िन्दगी

मुखौटा

सच में झूठ
रोटी में भूख
आज में कल
दिन में रात
निर्माण में विध्वंश
सृजन में तबाही
विकास में विनाश
आराम में हराम
सुहागन में विधवा
सद्कर्म में दुष्कर्म
सुविधा में कष्ट
संन्यासी में गृहस्थ मन
देव आत्मा में प्रेत आत्मा
देश भक्त में देश द्रोही
नैतिकता में अनैतिकता
असली चहरे पर
नकली चहरे का
मुखौटा लगाती ज़िन्दगी

मुखौटा

ख़ुशी में ईर्ष्या
रिश्तों में रंजिश
सहयोग में साजिश
असली में नकली
विधान में विघ्न
मालिक में नौकर
ज़िन्दगी में मौत
निस्वार्थ में स्वार्थ
पूजा में पाखण्ड
सतसंग में कुसंग
हास्य में उपहास
मुहब्बत में नफ़रत
सफलता में विफलता
मुस्कान में कुठिलता
मुँह में राम बगल में छुरी
असली चहरे पर
नकली चहरे का
मुखौटा लगाती ज़िन्दगी

गिरगिट

कभी अपनी बेबसी,
लाचारी और मज़बूरी में
तो कभी अपनी खुदगर्जी,
चालाकी और मक्कारी में
अपने फ़ायदे के लिये
गिरगिट की तरह से
रंग बदलाती ज़िन्दगी।